नगरीय बस्तियाँ
(URBAN SETTLEMENTS)

नगरीय बस्तियाँ ग्रामीण बस्तियों से अपने कार्यों एवं स्वरूपों दोनों में ही भिन्न होती हैं। ग्रामीण बस्तियों का मुख्य आधार कृषि होता है, जबकि नगरीय बस्तियों का आधार उद्योग एवं सेवा होता है। **अरूसो** के अनुसार, "नगरीय बस्तियों में रहने वाले लोगों को अपने भोजन और वस्त्रों के लिए अनाज और रेशे उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं होती। ये लोग इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए विनिर्मित माल तैयार करने, इनके खरीदने-बेचने और अन्य लोगों को लिखाने-पढ़ाने, राज-काज चलाने और इसी तरह के अन्य कार्यों में लगे रहते हैं।" अतएव किसी भी नगरीय बस्ती के लिए कृषि के विपरीत, अन्य विशेष आर्थिक क्रियाएँ एवं सेवाएँ प्रधान होती हैं। इनमें से कोई-सी एक या अनेक कार्य और सेवाएँ इन बस्तियों के विकास और उन्नति के लिए उत्तरदायी होती हैं।

ज्लाश ने तो यहाँ तक कहा है, "नगर एक सामाजिक संगठन होता है जिसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह सभ्यता की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जिस तक कुछ क्षेत्र नहीं पहुँच पाये हैं जो शायद कभी पहुँच भी न सकें।"

डॉ. ममफोर्ड ने नगरों के सामाजिक महत्व को इस प्रकार समझाया है, "जैसा कि इतिहास में मिलता है, नगर एक समुदाय की शक्ति और संस्कृति के मिलने का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहीं विभिन्न जीवों की किरण एक होकर सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाती है। यह सामाजिक सम्बन्ध का द्योतक है। यह मन्दिर (धर्म), बाजार, न्यायालय और शिक्षा का घर होता है। यहीं नगर में सभ्यता की वस्तुओं का उत्पादन और आदान-प्रदान होता है। यहीं मानव का आनुभविक जगत्, दर्शन व चिंतन का स्वरूप तथा विशिष्ट व्यवस्था का रूप फलता-फूलता है। यहीं सभ्यता की चर्चाएँ होती हैं और यहीं समय-समय पर समाज की विशेष संरचना के निर्माण से सम्बन्धित विभिन्न नाटक खेले जाते हैं।" इन्हीं नगरों में विभिन्न क्षेत्रों से जन-समुदाय आकर एकत्रित हो जाता है और शनैः-शनैः इनकी जनसंख्या बढ़ जाती है।

नगरों की परिभाषा—विभिन्न देशों में नगरों को परिभाषित करने के लिए विभिन्न आधार एवं नियम अपनाये जाते हैं जो बदलते भी रहते हैं। भारत में 2001 की जनगणना में नगरों को परिभाषित करने के लिए निम्नांकित दो मानकों को अपनाया गया है—

(अ) संवैधानिक नगर—संवैधानिक नगर वे हैं जहाँ नगरपालिका या नगर निगम या कैण्टोनमेंट बोर्ड या नौटीफाइड टाउन एरिया कमेटी है।

(ब) जनगणना नगर—वे सभी स्थान जनगणना नगर कहलाते हैं, जो निम्नांकित शर्तों को पूरा करते हैं—

(1) जिनकी जनसंख्या कम से कम 5,000 हो।

(2) जिनकी 75 प्रतिशत कार्यशील पुरुष जनसंख्या कृषि को छोड़कर अन्य कार्यों जैसे—विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र में संलग्न हो।

(3) जिनकी जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर (अथवा 1,000 प्रति वर्ग मील हो।)

भारत में नगरों का विकास
(EVOLUTION OF CITIES IN INDIA)

भारत की सिन्धु-घाटी की सभ्यता 5,000 वर्ष पुरानी मानी जाती है जिसके ध्वंसावशेष आज भी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में देखने को मिलते हैं। राजस्थान में **नगरी** (चित्तौड़गढ़), **आहड़** (उदयपुर), **बागोर** (भीलवाड़ा), **कालीबंगा** (गंगानगर) में भी प्राचीन नगरों के खण्डहर मिले हैं। शिवालिक की तलहटी में रोपड़ से लेकर कराची के पश्चिम में अरब सागर के तट पर सोतका कोह तक 60 से अधिक स्थानों पर हड़प्पाकालीन सभ्यता के केन्द्र

मिले है। नगर नियोजन पर **मनसारा** के अनुसार आर्यावर्त गंगा और सिन्धु की घाटियों तक फैला था। इसमें व्यापार के लिए **पत्तन**, सुरक्षा के लिए **दुर्ग** और **राजधानी**, शिक्षा के लिए **विश्वविद्यालयी नगर** और उद्योग के लिए औद्योगिक **नगरों** का विकास हुआ था। इसी काल में मिथिला, द्वारिका, मथुरा, हरिद्वार, कन्नौज, अयोध्या, इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर नगरों का विकास गंगा की घाटी में हुआ।

वैदिक काल में सतलज-यमुना के मध्यवर्ती प्रदेश में कुरुक्षेत्र, पैहोवा, थानेश्वर, कैथल, कपिस्थला (पुँडरी), राजौद, करनाल, पानीपत, सोनीपत, तिलपत और पलवल नगरों का उल्लेख मिलता है।

महाभारत काल में कटोल (कुन्तलपुर), रामटेक, मानसर, मणिकलकुण्ड, भीवपुर, डोगरताल, पतनसवांगी, नादीवर्धन, भ्रदपतन आदि नगर अस्तित्व में थे। इस काल में पश्चिम बंगाल, सौराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश में अनेक व्यापारिक, धार्मिक, औद्योगिक नगर एवं राजधानियाँ विकसित हो चुकी थीं।

बौद्ध काल तो एक प्रकार से नगरों के निर्माण का स्वर्ण युग (Golden Age) माना जाता है। चीनी यात्रियों (फाह्यान और ह्वेनसांग) के लेखों तथा भारतीय शिलालेखों और नगरों के खण्डहरों से ज्ञात होता है कि बौद्ध काल और उसके उपरान्त चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य, अशोक, कनिष्क और हर्षवर्धन प्रभृति सम्राटों ने अपने राज्यकाल में सुनियोजित नगरों का विकास किया था। इस काल में तक्षशिला, नालन्दा, पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, सांची, भरहुत, राजगिरि, अवन्तिका, अजन्ता, नागार्जुनकोंडा, त्रिचूर आदि नगरों का विकास हो चुका था।

मुगल काल में अकबर के समय फतेहपुर सीकरी, आगरा, शाहजहाँ के समय दिल्ली का पुनर्निर्माण तथा बाद में बीजापुर, औरंगाबाद, गोलकुण्डा, बीदर, तुगलकाबाद, शाहजहानाबाद, दौलताबाद, जैसलमेर, मांडू, अहमदनगर, हैदराबाद, बंगलुरु (बंगलौर), मैसूर (मैसुरु) आदि नगरों का विकास हुआ।

प्राचीन युग के प्राय: सभी नगर नदियों के किनारे स्थित थे जिनका मुख्य कार्य प्रशासन करने के अतिरिक्त धार्मिक और शिक्षा से भी सम्बन्धित था। प्राचीन नगरों की गणना में मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कुरुक्षेत्र, पानीपत, तक्षशिला, प्रयाग, गया, दरभंगा, ढाका, वर्द्धमान, जनकपुर, लोथल, उज्जैन, इन्दौर, अवन्तिका, कालीबंगा, सहस्त्रधारा, झाँसी, वाराणसी, नालन्दा, राजगिरि, महाबलीपुरम्, तिरुचिरापल्ली, तंजावूर, श्रीरंगम, कौशाम्बी, वैशाली, मथुरा, दशपुर, कन्नौज, अयोध्या, उदयपुर, नगरी (चित्तौड़), मण्डोर (जोधपुर), आमेर (जयपुर), पुष्कर आदि नगर थे। इनमें से अनेक नगर भारतीय मूर्ति कला, वास्तुशिल्प, प्राचीन सभ्यता, उद्योग एवं संस्कृति के प्रतीक थे। कुछ नगर शिक्षा के विशाल केन्द्र थे जिनमें भारत ही नहीं, चीन, ईरान आदि देशों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे तो कुछ धार्मिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण थे।

मुगल साम्राज्य के बाद नगरों का विकास अधिक तेजी से नही हो पाया, क्योंकि राजनीतिक स्थिति निरन्तर अस्थिर बनी हुई थी किन्तु फिर भी 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने कई नये नगरों को जन्म दिया। अंग्रेजों ने कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में अपने कार्यालय बनाकर उसे राजधानी बनाया। इसके अतिरिक्त, व्यापारिक कोठियाँ सूरत, बम्बई (मुम्बई), मद्रास (चेन्नई), चन्द्रनगर आदि नगरों में बनायीं। इसके उपरान्त नयी दिल्ली राजधानी के रूप में; पुणे, मेरठ, बंगलुरु (बंगलौर), महू, नीमच, जबलपुर, नसीराबाद आदि फौजी छावनियों (Cantonments) के रूप में; मुगलसराय, खड़गपुर, अजमेर आदि रेल मार्गों के मिलन केन्द्रों (Railway Junctions) के रूप में; कोलकाता, विशाखापट्टनम, मुम्बई, चेन्नई आदि का पत्तनों (Ports) के रूप में तथा ग्रीष्मकालीन सैरगाहों (Summer Resorts) के रूप में शिमला, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग, शिलांग, पचमढ़ी, आबू, उटकमंड, महाबलेश्वर, डलहौजी, कोडाइकनाल आदि नगरों का विकास उल्लेखनीय है।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त नगरों के विकास में पर्याप्त तेजी आयी। सिंद्री, राउरकेला, भिलाई, दुर्गापुर, बोकारो, नंगल आदि नगरों का औद्योगिक केन्द्रों के रूप में तथा राँची, भुवनेश्वर, भोपाल, बंगलुरु, गांधीनगर, चण्डीगढ़ आदि नगरों को राजधानी के रूप में विकसित किया गया। पुराने नगरों का सुनियोजित ढंग से विस्तार किया गया। यह कहना असंगत न होगा कि पिछले 69 वर्षों में भारतीय नगरों की उत्पत्ति एवं विकास देश के विभिन्न भागों में औद्योगीकरण और परियोजनाओं के फलस्वरूप हुआ है।

भारत में नगरीकरण
(URBANIZATION IN INDIA)

नगरीकरण एक जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रदेश या देश की जनसंख्या का बढ़ रहा भाग नगरीय क्षेत्र में निवास करता है। यह एक व्यावहारिक प्रक्रिया है। इसे नगर के क्षेत्रफल एवं नागरिकों की संख्या में वृद्धि से

प्रकट किया जाता है। इसमें नगर के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संगठन और उनका क्षेत्रीय वितरण एवं विभेदीकरण का अध्ययन भी सम्मिलित है जो नगर नियोजन में सहायक है।

सामान्यत: नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें एक ग्रामीण जनसंख्या नगरीय जनसंख्या में बदल जाती है। इससे कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि होती है।

भारत में नगरीकरण का प्रारम्भ 300 ईसा पूर्व से ही हो गया था। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के नगरीय केन्द्रों को सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय इतिहास के प्राचीन एवं मध्यकालीन कस्बों और नगरों का उद्‌भव मुख्यत: सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारणों से हुआ है। इसके बाद ब्रिटिश काल में नगरीकरण की प्रक्रिया को एक नयी दिशा मिली। ब्रिटिश सरकार ने भारत में अनेक स्थानों पर व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की।

जनसंख्या के आधार पर भारत के नगरीय अधिवासों को निम्नलिखित 6 भागों में विभाजित किया गया है—

वर्ग	जनसंख्या	वर्ग	जनसंख्या
I	1,00,000 से अधिक	II	50,000—99,999
III	20,000—49,999	IV	10,000—19,999
V	5,000—9,999	VI	5,000 से कम

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति (Trend of Urbanization in India)—भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति धीमी रही है। इसका प्रमुख कारण कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था तथा सुखद ग्रामीण अनुभूति रही है। 1901 में भारत में केवल 10.84% जनसंख्या नगरीय थी जो 1931 में बढ़कर 11.97%, 1941 में 13.86% तथा 1951 में बढ़कर 17.29% हो गयी। 1961 के बाद देश में नगरीकरण की प्रवृत्ति में तेजी आयी जब देश की अर्थव्यवस्था में **सामाजिक मान्यता, प्राकृतिक प्रकोप का नियन्त्रण और शिक्षा तथा परिवहन का नवीन दौर हुआ।** 1991 में देश की नगरीय जनसंख्या 25.72% हो गयी। यह 2001 में बढ़कर 27.78 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार नगरीय जनसंख्या 31.16% हो गयी है।

भारत में नगरीकरण की वर्तमान प्रवृत्ति (1901-2011)

वर्ष	नगर समूह नगरों की संख्या	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	कुल जनसंख्या में नगरीकरण की गति प्रतिवर्ष %				
				नगरीय जनसंख्या %	नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि	वार्षिक घातीय वृद्धि दर	नगरीय जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि % में	नगरीय जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि की दर % में
1901	1,627	236396327	25151873	10.84	—	—	—	—
1911	1,815	252093390	25941633	10.29	0.35	0.03	–0.06	–0.03
1921	1,949	251321213	28086167	11.18	8.27	0.79	0.09	0.79
1931	2,072	278977238	33455989	11.97	19.12	1.75	0.08	1.75
1941	2,250	318660580	44153297	13.86	31.97	2.77	0.19	2.77
1951	2,843	361086090	62443709	17.29	41.42	3.47	0.34	3.47
1961	2,365	439234771	78936603	17.97	26.41	2.34	0.07	2.34
1971	2,590	548159852	109113977	19.91	38.23	3.21	0.19	3.21
1981	3,378	683329097	159462547	23.34	46.14	3.83	0.34	3.83
1991	3,768	844324322	217177625	25.72	36.19	3.09	0.24	3.09
2001	5,161	1027015247	285354371	27.78	31.13	—	—	3.13
2011	7,933	121.05 करोड़	37.71 करोड़	31.16	32.17	—	—	3.18

भारत के राज्य तथा केन्द्र-शासित प्रदेशों की नगरीय जनसंख्या को नीचे तालिका में दर्शाया गया है–

भारत के राज्यों/केन्द्र-शासित प्रदेशों में नगरीय जनसंख्या का विवरण (1991-2011)

भारत/राज्य/संघ क्षेत्र	1991		2011	
	नगरीय जनसंख्या	कुल जन. में नगरीय जन. का प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या	कुल जन. में नगरीय जन. का प्रतिशत
सम्पूर्ण भारत	**2,17,177,625**	**25.72**	**2,85,354,371**	**31.2**
राज्य				
1. आन्ध्र प्रदेश	17,812,693	26.84	20,808,940	33.4
2. अरुणाचल प्रदेश	194,806	12.21	227,881	22.9
3. असोम	2,470,888	11.08	3,339,240	14.1
4. बिहार	11,368,889	13.17	86,81,800	11.3
5. गोवा	479,421	41.02	670,577	62.2
6. गुजरात	14,164,301	34.40	18,930,250	42.6
7. हरियाणा	4,045,170	24.72	6,115,304	34.9
8. हिमाचल प्रदेश	444,824	8.70	594,581	10.0
9. जम्मू एवं कश्मीर	1,839,400	23.83	2,516,638	27.4
10. कर्नाटक	13,850,702	30.91	17,961,529	38.7
11. केरल	7,676,371	26.44	8,266,925	47.4
12. मध्य प्रदेश	15,348,047	23.21	15,967,145	27.6
13. महाराष्ट्र	30,496,352	38.73	41,100,980	45.2
14. मणिपुर	505,848	27.69	575,964	32.5
15. मेघालय	329,079	18.69	454,111	20.1
16. मिजोरम	317,040	46.20	441,006	52.1
17. नागालैण्ड	210,095	17.28	342,787	28.6
18. ओडिशा	4,232,455	13.43	5,517,238	16.7
19. पंजाब	6,000,88	29.72	8,262,511	37.5
20. राजस्थान	10,040,118	22.88	13,214,375	24.9
21. सिक्किम	36,984	9.12	59,870	25.2
22. तमिलनाडु	19,027,033	34.20	27,438,998	48.4
23. त्रिपुरा	418,983	15.26	545,750	26.2
24. उत्तर प्रदेश	27,653,410	19.89	34,539,582	22.3
25. पश्चिम बंगाल	18,622,014	27.39	22,424,251	31.9
26. उत्तराखण्ड	—	—	2,179,074	30.2
27. झारखण्ड	—	—	5,993,741	24.0
28. छत्तीसगढ़	—	—	4,185,747	23.2
संघ क्षेत्र				
1. अण्डमान एवं निकोबार	74,810	26.80	116,198	37.7
2. चण्डीगढ़	574,646	89.69	808,515	97.3
3. दादरा-नगर हवेली	11,720	8.47	50,463	46.7
4. दमन-दीव	47,538	46.86	57,348	75.2
5. दिल्ली	8,427,083	89.93	12,905,780	97.5
6. लक्षद्वीप	29,089	56.29	26,967	78.1
7. पुडुचेरी	516,934	64.05	648,619	68.3

Source—(i) *Census of India*, 2001, Series-1 Paper-2, Provisional Population : Rural-Urban-Distribution, Registrar General & Census Commissioner India. (ii) Final Population India, Census of India, 2011

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

(1) **नगरीकरण की वृद्धि का मन्द युग** (Slow Period of Urbanization)—1901 से 1931 तक का समय नगरीकरण की वृद्धि का मन्द युग माना जाता है। 1901 में नगरीय जनसंख्या 10.84% थी जो 1931 में बढ़कर 11.97% हो गयी। इस काल में 1901 से 1921 तक अकाल एवं बीमारियों का दौर रहा था, अत: जनसंख्या वृद्धि कम रही।

(2) **नगरीकरण की वृद्धि का मध्यम युग** (Medium Period of Urbanization)—नगरीकरण का मध्यम काल 1931 से 1961 तक माना जाता है। इस काल में नगरीय जनसंख्या 45 मिलियन बढ़ी। 1931 में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 11.97 था जो 1961 में बढ़कर 17.97 हो गया। इस काल में नगरीय वृद्धि लगभग ढाई गुना हो गयी। इस काल में राजनीतिक अस्थिरता रही तथा आर्थिक विकास का काल भी धीमा रहा। अत: जनसंख्या वृद्धि दर कम रही।

(3) **नगरीकरण वृद्धि का तीव्र युग** (Rapid Period of Urbanization)—1961 के बाद देश में नगरीकरण में तेजी से वृद्धि आयी जब देश की अर्थव्यवस्था में सामाजिक मान्यता, प्राकृतिक प्रकोप का नियन्त्रण और शिक्षा तथा परिवहन का दौर रहा। 1991 में नगरीय जनसंख्या 25.72% हो गयी।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरीय जनसंख्या 37,71,06,125 हो गयी जो देश की कुल जनसंख्या का 31.2% है।

नगरीय बस्तियों के प्रकार
(TYPES OF URBAN SETTLEMENTS)

सामान्यत: नगरों को दो आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है—

(1) **जनसंख्या के आधार पर**—सामान्यत: एक लाख से कम जनसंख्या वाले केन्द्रों को **कस्बा** (Town) कहा जाता है। जब जनसंख्या एक लाख या इससे अधिक किन्तु 10 लाख से कम होती है तो ऐसे केन्द्रों को **नगर** (City) कहा जाता है। 10 से 50 लाख तक की जनसंख्या वाले केन्द्रों को **महानगर** (Metropolis) कहा जाता है। 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाले केन्द्रों को **वृहद् नगर** (Megalopolis) कहा जाता है। जब कई कस्बे फैलते हुए आपस में मिल जाते हैं तो उन्हें **सन्नगर** (Conurbation) कहा जाता है। भारतीय जनगणना विभाग द्वारा भारतीय नगरीय केन्द्रों को 6 वर्गों में रखा गया है। भारतीय जनगणना विभाग द्वारा वर्गीकृत नगरों का विवरण नीचे तालिका में दिया जा रहा है—

जनसंख्या आकार अनुसार कस्बों तथा नगरों की जनसंख्या (2001)

वर्ग	जनसंख्या आकार	नगरों की संख्या	जनसंख्या (करोड़ में)	कुल नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	वृद्धि (प्रतिशत में) (1999-2001)
I	1,00,000 तथा अधिक	423	17.204	61.48	23.12
II	50,000—99,999	498	3.443	12.30	43.45
III	20,000—49,999	1,386	4.197	15.00	46.19
IV	10,000—19,999	1,560	2.260	8.08	32.94
V	5,000—9,999	1,057	0.798	2.85	41.49
VI	5,000 तथा कम	227	0.080	0.29	21.21
कुल		5,161	28.535	100.00	31.13

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि नगरीय जनसंख्या सबसे अधिक प्रथम वर्ग के नगरों में है। इनमें देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 61.48 प्रतिशत है। ऐसे नगर 423 हैं। ऐसे नगरों में 53 महानगर हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक है। इन महानगरों में भी 6 महानगर (वृहत् मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई, बंगलुरु, अहमदाबाद तथा हैदराबाद) 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाले हैं। इन महानगरों में नगरीय जनसंख्या का 21 प्रतिशत भाग है। जनसंख्या के हिसाब से तृतीय वर्ग के नगरों का द्वितीय स्थान है क्योंकि इनकी जनसंख्या 4.2 करोड़ है, जो कुल नगरीय जनसंख्या का 15 प्रतिशत है। इनको वृद्धि दर (1991-2001) भी सर्वाधिक (46.19 प्रतिशत) रही है। सबसे कम जनसंख्या छठे वर्ग के नगरों की है। इनके द्वारा नगरीय जनसंख्या में 0.29 प्रतिशत का योगदान दिया गया है।

वर्ष 2011 में भारत के महानगरों की जनसंख्या का अवरोही क्रम निम्नवत् रहा :

1. वृहत्तर मुम्बई (184.1 लाख), 2. दिल्ली (163.1 लाख), 3. कोलकाता (141.1 लाख), 4. चेन्नई (86.9 लाख), 5. बंगलुरु (बंगलौर) (84.9 लाख), 6. हैदराबाद (77.5 लाख)।

वर्ष 2001 में भारत में नगरों की कुल संख्या 5,161 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 7,933 हो गई।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले 53 महानगर हैं जिनकी जनसंख्या निम्न तालिका में दी जा रही है—

दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले महानगर, 2011

क्र.सं.	नाम	कुल जनसंख्या, 2011 (लाख में)	क्र.सं.	नाम	कुल जनसंख्या, 2011 (लाख में)
1.	मुम्बई	184.14	28.	लुधियाना	16.14
2.	दिल्ली	163.15	29.	नासिक	15.63
3.	कोलकाता	141.13	30.	विजयवाड़ा	14.91
4.	चेन्नई	86.96	31.	मदुरै	14.62
5.	बंगलुरु	84.99	32.	वाराणसी	14.35
6.	हैदराबाद	77.49	33.	मेरठ	14.25
7.	अहमदाबाद	63.52	34.	फरीदाबाद	14.05
8.	पुणे	50.50	35.	राजकोट	13.91
9.	सूरत	45.85	36.	जमशेदपुर	13.37
10.	जयपुर	30.37	37.	श्रीनगर	12.73
11.	कानपुर	29.20	38.	जबलपुर	12.67
12.	लखनऊ	29.01	39.	आसनसोल	12.43
13.	नागपुर	24.98	40.	वसई-विरार	12.21
14.	गाजियाबाद	23.58	41.	इलाहाबाद	12.17
15.	इन्दौर	21.67	42.	धनबाद	11.95
16.	कोयम्बटूर	21.51	43.	औरंगाबाद	11.89
17.	कोच्चि	21.18	44.	अमृतसर	11.84
18.	पटना	20.47	45.	जोधपुर	11.38
19.	कोझीकोड़	20.31	46.	राँची	11.26
20.	भोपाल	18.83	47.	रायपुर	11.23
21.	त्रिचुर	18.55	48.	कोल्लमङ	11.10
22.	वड़ोदरा	18.17	49.	ग्वालियर	11.02
23.	आगरा	17.46	50.	दुर्ग भिलाई नगर	10.64
24.	विशाखापट्टनम	17.30	51.	चण्डीगढ़	10.26
25.	मलप्पुरम	16.99	52.	त्रिरुचिरापल्ली	10.22
26.	तिरुवन्तपुरम	16.87	53.	कोटा	10.01
27.	कन्नूर	16.43			

स्रोत : भारत की जनगणना, 2011

नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण (Functional Classification of Cities)—प्रकार्यात्मक वर्गीकरण के आधार पर भारतीय नगर निम्नांकित रूपों में मिलते हैं—

(1) **औद्योगिक नगर** (Industrial Cities)—इन नगरों में निकटवर्ती क्षेत्रों में पाये जाने वाले कच्चे माल से निर्मित सामान तैयार किया जाता है। जैसे—कच्चे लोहे को गलाकर इस्पात बनाना, रुई से कपड़े, चूने पत्थर से सीमेण्ट अथवा बालू से मिट्टी काँच बनाना।

औद्योगिक नगरों की स्थापना में खाद्य सामग्री की उपलब्धता का कोई विचार नहीं रखा जाता क्योंकि यह सामग्री दूर के स्थानों से प्राप्त की जा सकती है। औद्योगिक नगर सामान्यत: या तो **(अ) कच्चे माल की निकटता के स्थान पर**; जैसे—शोलापुर, ब्यावर, डिंडीगुल, बंगलुरु, जमशेदपुर, कटनी, अहमदाबाद, भिलाई, टीटागढ़ अथवा

(ब) कोयले या शक्ति उत्पादन के क्षेत्रों के निकट; जैसे—रानीगंज, बर्नपुर, दुर्गापुर, कुल्टी, बोकारो, झरिया, आसनसोल, जोगेन्द्रनगर, कोलार, मैटूर और मदुरै अथवा **(स) निर्यात की सुविधाएँ मिलने के कारण**; जैसे—ओखा, विशाखापट्टनम, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई आदि विकसित होते है।

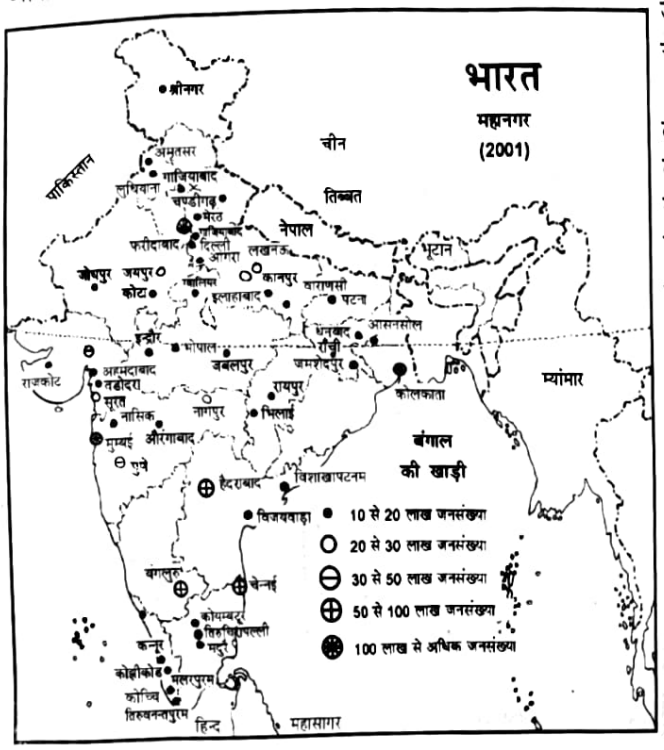

औद्योगिक नगरों के अन्य उदाहरण नागपुर, कानपुर, मैसूर, भद्रावती, गाजियाबाद, लुधियाना, कोटा, अजमेर, भीलवाड़ा, पुणे, चितरंजन, जमशेदपुर, जे. के. नगर, नंगल, अलवाये, सूरत, वडोदरा, मुरादाबाद, मोदीनगर, फिरोजाबाद, अलीगढ़, कोयम्बटूर आदि हैं।

(2) **वाणिज्यिक नगर या व्यापार केन्द्र** (Commercial Cities or Trade Centres)—आरम्भ में ये नगर छोटे होते हैं किन्तु धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने पर इनकी जनसंख्या भी बढ़ती जाती है। नागपुर, हापुड़, मेरठ, गंगानगर, खेतड़ी, ब्यावर, भीलवाड़ा, रायपुर तथा साहिबगंज इस प्रकार के नगरों के प्रमुख उदाहरण हैं।

व्यापारिक नगरों का विकास निम्नलिखित क्षेत्रों में होता है—(1) **ग्रामीण क्षेत्रों के बीच** किसी सड़क के निकट या रेलमार्ग के समीप; (2) **दो विपरीत प्रकार के प्रदेशों के मिलन के क्षेत्र में**; जैसे—पर्वतों और मैदानों के मिलने की सीमा पर, जैसे—देहरादून, बरेली, पठानकोट, कोटद्वार, रामनगर, काठगोदाम, खेरी, बहराइच, रक्सौल, सिलीगुड़ी, हरिद्वार आदि; (3) **मरुस्थलों की सीमा पर**; जैसे—जोधपुर, जैसलमेर, चुरू, बीकानेर, लूनी; (4) **सड़कों या मार्गों के मिलन पर**; जैसे—भटिण्डा, इटारसी, कटनी, नागपुर, गुण्टकल, आगरा अथवा (5) **बन्दरगाहों पर**; जैसे—विशाखापटनम, कोच्चि, न्यू मंगलौर, कोझीकोड, हल्दिया, पाराद्वीप, सूरत आदि।

(3) **परिवहन नगर** (Transport Cities)—ये वे नगर होते हैं जो परिवहन के मार्गों के मिलन पर विकसित होते है, यथा—(अ) मार्ग में बाधा के समीप अथवा (ब) दो या अधिक व्यापारिक मार्गों के मिलन पर।

(अ) मार्ग में बाधा के समीप जहाँ स्थलीय बाधाओं के कारण सामान को बड़े टुकड़ों से छोटे टुकड़ों में बाँटना आवश्यक हो जाता है जिससे उसका स्थानान्तरण सरलता से किया जा सके; जैसे—(1) जहाँ रेलमार्ग समाप्त होकर आगे मोटरगाड़ियाँ जाती हों; जैसे—काठगोदाम, सिलीगुड़ी, (2) जहाँ समुद्री मार्ग अथवा आन्तरिक जलमार्ग समाप्त होकर रेलमार्ग आरम्भ होता है; जैसे—भारत के बड़े बन्दरगाह जहाँ माल को गोदामों में रखना, छाँटना, उन्हें बाँधना आदि किया जाता है।

(ब) दो या अधिक मार्गों के मिलने पर, जहाँ दो नदियाँ मिलती हैं; जैसे—(1) **गंगा-यमुना के मिलने पर** इलाहाबाद; (2) **नदियों के चौड़े मुहाने पर**; जैसे—कोलकाता, सूरत; (3) **नदियों के मोड़ों पर**; जैसे—विजयवाड़ा, कटक, राजमुन्द्री; (4) **नदियों के पुलों के समीप**; जैसे—वाराणसी, पटना आदि।

(4) **प्रशासनिक नगर या राजधानियाँ** (Administrative Cities or Capitals)—ऐसे नगर विभिन्न राज्यों में प्रशासनिक कार्य करने हेतु विकसित किये जाते हैं। ये अपने पृष्ठदेश से सड़कों और रेलमार्गों द्वारा सम्बद्ध होते हैं। राजकीय विभागों की स्थापना के कारण सरकारी कार्य हेतु लोगों का आना-जाना बना रहता है। जनसंख्या भी अधिक होती है जिसके लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ जुटायी जाती हैं। पुलिस थाना, डाकघर, शिक्षण संस्थाएँ, चिकित्सालय आदि होते हैं। इन नगरों के चारों ओर प्रायः दीवारें बनी होती हैं किन्तु आधुनिक काल में नगरों के बहुमुखी विकास के कारण ये तोड़ दी गयी हैं। लखनऊ, चण्डीगढ़, भोपाल, भुवनेश्वर, गाँधीनगर, जयपुर, दिल्ली आदि प्रमुख प्रशासनिक नगर हैं।

(5) **खनिज केन्द्र** (Mining Centres)—ये खनिज-प्राप्ति के स्थानों पर विकसित होते हैं; जैसे—झरिया, रानीगंज, बोकारो, हजारीबाग, छिंदवाड़ा, डिगबोई, अंकलेश्वर, कोयली, गुवाहाटी, कोलार, कोडरमा, साँभर, धनबाद, आसनसोल, गिरिडीह आदि।

(6) **धार्मिक केन्द्र** (Religious Centres)—नदियों के किनारे अथवा समुद्रतटीय भागों या पहाड़ी क्षेत्रों में ऐसे नगरों का विकास पाया जाता है। कुरुक्षेत्र, मथुरा, गया, बौद्ध गया, तंजावुर, काँचीवरम, पुरी, नासिक, द्वारिका, वाराणसी, देवबन्द, प्रयाग, हरिद्वार, रामेश्वरम्, मदुरै, तिरुचिरापल्ली, तिरुपति, सोमनाथ, कन्याकुमारी, नाथद्वार आदि ऐसे ही धार्मिक स्थान हैं।

(7) **सैनिक छावनियाँ (गैरीसन या सुरक्षा नगर)** (Cantonments)—इनके अन्तर्गत वे नगर आते हैं जहाँ सैनिक फौजी टुकड़ियाँ रखी जाती हैं। अम्बाला, मेरठ, रुड़की, देहरादून, नसीराबाद, महू, ग्वालियर, पुणे, जबलपुर, सागर, इलाहाबाद आदि ऐसी छावनियाँ हैं।

प्रकार्यात्मक क्षेत्र (Functional Zones)—प्रत्येक नगर में किये जाने वाले विशिष्ट कार्यों के आधार पर इसके विशिष्ट क्षेत्र बन जाते हैं जिन्हें प्रकार्यात्मक क्षेत्र कहा जाता है। प्रायः प्रत्येक नगर का केन्द्रीय भाग महत्वपूर्ण होता है जो सभी ओर से मुख्य एवं सहायक सड़कों द्वारा जुड़ा होता है। यह सबसे घना भाग भी होता है। इस भाग में थोक व्यापार व व्यावसायिक संस्थान, प्रशासनिक कार्यालय, होटल, सिनेमा हॉल, बैंक, बीमा कम्पनियाँ एवं पहले से बने निवास-स्थान होते हैं। सबसे पहले नगर का यही भाग पनपता है फिर ज्यों-ज्यों इस भाग का आकार बढ़ता जाता है, निवास-स्थल की अपेक्षा व्यावसायिक क्षेत्र अधिक उन्नत होता जाता है और कार्यालय प्रायः सड़कों के दोनों ओर बनाये जाने लगते हैं क्योंकि यहाँ पर भूमि व भवनों की कीमतें व किराया सबसे ऊँचा रहता है। नये निवास-स्थान नगर के बाहरी भागों की ओर बसाये जाने लगते हैं। अनेक बड़े नगरों में यह केन्द्रीय भाग अब निवास-स्थल न रहकर व्यावसायिक कार्यालयों का गढ़ बन गया है। रात्रि के समय प्रायः जन-शून्य रहता है। इसे ही नगर का केन्द्रीय व्यावसायिक भाग (Central Business District or CBD) भी कहते हैं। यही नगर का हृदय स्थल कहलाता है।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित अन्य क्षेत्र (खण्ड) होते हैं—

(1) **निवास खण्ड** (Residential Zone)—इस खण्ड में नगर के सभी समुदायों के लिए घर बने होते हैं। इनकी आकृति, स्वरूप आदि व्यक्ति विशेष की आर्थिक स्थिति के द्योतक होते हैं।

प्रारम्भ में ऐसा क्षेत्र व्यावसायिक क्षेत्र से सटा होता है किन्तु नगर के तेजी से विकास के साथ यह दो उप-भागों में बँट जाता है। एक निवास क्षेत्र मध्यम व श्रमिक वर्ग का नहीं बना रहता है। दूसरा अधिक विकसित हवादार बंगलों व ऊँची इमारतों का भवन उपनगरों के निकट बाहरी भाग में बनता जाता है। यहाँ उच्च वर्ग का समाज रहता है जिनके पास अपने वाहन होते हैं।

(2) **औद्योगिक खण्ड** (Industrial Zone)—इनमें विभिन्न वस्तुओं के उत्पादक कारखाने मरम्मत के लिए वर्कशॉप, शक्तिघर आदि होते हैं। ऐसे लघु एवं मध्यम उद्योगों को एक ही स्थान पर केन्द्रित करने के लिए सरकार व उद्योग संस्थान वहाँ कई सुविधाएँ एवं छूट भी देता है। ऐसा स्थान घनी जनसंख्या से दूर स्थित होता है।

(3) **प्रशासनिक खण्ड** (Administrative Zone)—इनमें स्थानीय राज्य या केन्द्रीय सरकार के कार्यालय, थाना, कचहरी, डाक और तारघर, तहसील तथा जिलाधीश के कार्यालय, म्यूनिसिपल कार्यालय, टेलीफोन एक्सचेंज आदि सम्मिलित किये जाते हैं।

(4) **शैक्षणिक क्षेत्र** (Educational Zone)—इनमें विद्यालय, महाविद्यालय, प्रशिक्षण संस्थाएँ आदि स्थित होती हैं। भारत के अधिकांश मध्ययुगीन नगरों के विकास के साथ-साथ शैक्षणिक संस्थाएँ भी सारे नगर में बिखरी हुई पायी जा सकती हैं।

(5) **सांस्कृतिक केन्द्र** (Cultural Zone)—इनमें खेल के मैदान, उद्यान, पार्क, क्लब, सांस्कृतिक सभाओं के कार्य-क्षेत्र, धार्मिक स्थान, अस्पताल, सिनेमाघर, थियेटर आदि सामाजिक मिलन स्थल, मेले आदि लगने के स्थान, शमशान, कब्रिस्तान आदि आते हैं। यह भी उपनगरों व बाहरी भागों के निकट स्थित होते हैं।

(6) **परिवहन क्षेत्र** (Transport Zone)—इनमें बस स्टैण्ड, ताँगा स्टैण्ड, रोडवेज के कार्यालय, ट्रांसपोर्ट नगर, रेलवे स्टेशन, लोको वर्कशाप, हवाई अड्डा आदि आते हैं। हवाई अड्डा सबसे अधिक दूरी पर स्थित होता है। धीरे-धीरे मुख्य नगर एवं हवाई अड्डे की सड़क पर उन्नत व्यावसायिक विकास एवं उच्च वर्ग की उदासीन बस्तियाँ बनती जाती हैं। ट्रकों के लिए महानगरों में ट्रांसपोर्ट नगर बनाये जाते हैं। यहाँ पर ट्रांसपोर्ट कम्पनियों एवं आयात-निर्यात पर निर्भर भारी माल की कम्पनियों के दफ्तर भी बनते जाते हैं।

भारतीय नगरों की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF INDIAN CITIES)

भारतीय नगरों की निम्नांकित विशेषताएँ हैं—

(1) भारत के अधिकतर नगरों का विकास गाँवों के विस्तार का परिणाम है अर्थात् यहाँ अधिकतर नगर ऐसे हैं जो पूर्वावस्था में गाँव के रूप में थे। उनके पुराने बसे क्षेत्रों में गाँवों की झलक स्पष्ट देखी जा सकती है।

(2) ग्रामीण वातावरण से ही विकसित होने के कारण यहाँ के निवासियों की आदतें भी बहुत कुछ ग्रामीण लोगों जैसी है, उनकी भाषा में भी ग्रामीणपन की झलक दिखायी देती है।

(3) अधिकतर नगरों में प्राचीन शासकों एवं प्राचीन प्रकार्यों के चिह्न दिखायी देते है।

(4) भारतीय नगरों में गन्दगी का साम्राज्य है। यहाँ गलियों में गन्दगी बहुत मिलती है।

(5) यहाँ के अधिकतर नगर बिना किसी योजना के हैं। इसीलिए उनमें गन्दगी अधिक है।

(6) अधिकतर भारतीय नगरों में गन्दी बस्तियों का साम्राज्य पाया जाता है। सर्वाधिक मलिन बस्तियाँ मुम्बई महानगर में है। धारावी एशिया की सबसे बड़ी मलिन बस्ती है।

(7) अनेक भारतीय नगर उप-नगरों सहित वृहद् नगरों में बदलते जा रहे हैं। ऐसा भारत में हो रहे तीव्र ग्राम-नगर प्रवास के कारण हो रहा है।

मलिन बस्तियाँ (Slums)

भारत में नगरीकरण से अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इनमें एक समस्या **मलिन बस्तियों** (Slums) का विकास भी है। जब महानगरों में अवैध रूप से बस्तियों का फैलाव होता है तो वे मलिन बस्तियों के रूप में ही विकसित होती हैं।

मलिन बस्तियों का अर्थ व परिभाषा—मलिन बस्तियाँ वे हैं जिनमें चारों ओर गन्दगी का साम्राज्य हो, झुग्गी-झोंपड़ियाँ दिखायी देती हों। ये आवास का निम्नतम स्तर होती हैं जिनमें छोटे-छोटे गन्दे मकानों में निवास करते हुए लोग किसी भी तरह अपना जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर होते हैं।

के. सी. दुबे के अनुसार, "ऐसे क्षेत्र जहाँ भवन भग्नावस्था के कारण मनुष्य निवास योग्य न हों, अत्यधिक भीड़-भाड़, मकानों की दोषपूर्ण बनावट, तंग रास्ते, प्रकाश तथा वायु की कमी हो, को गन्दी बस्ती कहते हैं।"

केन्द्र सरकार द्वारा 1956 में निर्मित गन्दी बस्ती क्षेत्र अधिनियम के अनुसार, "गन्दी बस्ती प्रमुख रूप से एक ऐसा निवासीय क्षेत्र है जहाँ के निवास स्थान नष्ट हो गये हैं एवं अत्यन्त भीड़-भाड़ युक्त हों, जिनकी डिजायन दोषपूर्ण हो, जहाँ रोशनदान, प्रकाश एवं सफाई का अभाव हो या इनमें से कुछ कारकों के सम्मिलित प्रभाव के कारण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं नैतिकता के लिए हानिप्रद हो।"

गन्दी बस्तियों का वितरण—2001 की जनगणना के अनुसार देश में 607 नगरों में मलिन बस्तियाँ थीं। इनमें कुल जनसंख्या 4.3 करोड़ है, जो मलिन बस्तियों वाले नगरों की कुल जनसंख्या का 22.58 प्रतिशत था।

महाराष्ट्र में इन बस्तियों की जनसंख्या 1.064 करोड़ है। राज्यों की जनसंख्या के अनुसार मेघालय में मलिन बस्तियों में जनसंख्या 41.33 प्रतिशत है जो सर्वाधिक है, जबकि केरल में यह प्रतिशत 1.81 है जो सबसे कम है। दस लाखी महानगरों में मलिन बस्तियों की जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात वृहत्तर मुम्बई नगर में है जहाँ इनका प्रतिशत 48.88 है। यहाँ पूरे महाराष्ट्र की लगभग 6 प्रतिशत जनसंख्या निवास कर रही है। भारत की सबसे बड़ी मलिन बस्ती धारावी भी मुम्बई में स्थित है। मुम्बई के विपरीत पटना में इनका प्रतिशत मात्र 0.25 है।

भारत के नगरीय क्षेत्र

श्रीमती कुसुमलता दत्ता ने नगरीय क्षेत्रों का वर्णन करते हुए दो तत्वों को ध्यान में रखा है— पहला, नगरीय जनसंख्या का घनत्व तथा द्वितीय, नगर का 50 किलोमीटर के व्यास में पड़ने वाला प्रभाव। देश को पाँच नगरीय क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(1) **उत्तरी मैदान के नगरीय क्षेत्र**—उत्तरी मैदान के नगरीय क्षेत्र का वर्णन निम्न प्रकार है—

(i) **उत्तर-पश्चिम का प्रमुख क्षेत्र**—इस क्षेत्र में प्रशासनिक इकाइयों एवं उद्योगों की अधिकता है। दिल्ली, चण्डीगढ़ एवं शिमला राजधानियाँ हैं, जबकि लुधियाना, फरीदाबाद, मेरठ, अमृतसर, अम्बाला, मोदीनगर, गाजियाबाद, आगरा आदि औद्योगिक नगर हैं।

(ii) **मध्यवर्ती क्षेत्र**—यह क्षेत्र गंगा की मध्य घाटी से सम्बन्धित है। इस क्षेत्र में कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, मुंगेर, इलाहाबाद, फैजाबाद, पटना, भागलपुर, गया, सिन्द्री आदि प्रमुख नगर हैं।

(iii) **पूर्वी क्षेत्र**—इसमें कोलकाता तथा इसका समीपवर्ती क्षेत्र सम्मिलित है। कोलकाता देश का द्वितीय बड़ा नगर एवं प्रमुख बन्दरगाह है। यहाँ विभिन्न प्रकार के उद्योगों का संकेन्द्रण है। अन्य बड़े नगर बाली, बजबज, टीटागढ़, रानीगंज, दमदम, जमशेदपुर, राँची तथा धनबाद हैं। यह क्षेत्र खनिज संसाधनों में बहुत सम्पन्न है अतः इसे **भारत का रूर क्षेत्र** (Ruhr of India) कहा जाता है।

(2) **दक्षिणी भारत के नगरीय क्षेत्र**—इस क्षेत्र में चेन्नई सबसे बड़ा नगर है। इसके अतिरिक्त बंगलुरु, क्विलोन, कोझीकोड़, कोच्चि, इर्नाकुलम, तूतीकोरिन, कुंभकोडम, मदुरै, कन्याकुमारी, तंजावुर, मैसुरु, तिरुचिरापल्ली एवं तिरुवनन्तपुरम आदि नगर हैं।

(3) **मुम्बई-अहमदाबाद क्षेत्र**—यह पश्चिमी भारत का महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश तक फैला है। मुम्बई भारत का सबसे बड़ा नगर है। इसके अतिरिक्त अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, अंकलेश्वर, पुणे, नागपुर, अमरावती, जलगाँव, नासिक, अकोला तथा शोलापुर अन्य महत्वपूर्ण नगर हैं।

(4) **कृष्णा-गोदावरी डेल्टा क्षेत्र**—यह क्षेत्र कृष्णा तथा गोदावरी के डेल्टाओं का बना है। इसके प्रमुख नगर विशाखापट्टनम, मचिलीपट्टनम, विजयवाड़ा, राजमुन्द्री, एलरू, गुण्टूर तथा विजयनगर आदि हैं।

(5) **ऊपरी कृष्णा का क्षेत्र**—इस क्षेत्र में कर्नूल, गुलबर्गा, कोल्हापुर, बेलगाम, हुबाली, धारवाड़, बेल्लारी, रायचूर, हास्पेट एवं अनन्तपुर आदि महत्वपूर्ण नगर हैं।

(6) **अन्य**—इन प्रमुख नगरीय क्षेत्रों के अतिरिक्त एक अन्य क्षेत्र है जिसका सम्बन्ध निकटवर्ती पठार से है। इसके नगरीय क्षेत्र अरावली पर्वत के पूरब और पश्चिम तथा मालवा के पठार पर हैं। पश्चिमी भाग में जोधपुर, बीकानेर और गंगानगर, पूर्वी भाग में कोटा, दक्षिण-पूर्वी छोर पर उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, अजमेर, जयपुर, कोटा, भरतपुर आदि हैं। मालवा के पठार पर उज्जैन, ग्वालियर, रतलाम, भोपाल, झाँसी, सागर, जबलपुर आदि महत्वपूर्ण नगर हैं।

स्मरणीय तथ्य (Points to Remember)

- ग्रामीण बस्तियाँ अपने जीवन का पोषण अथवा आधारभूत आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति भूमि आधारित प्राथमिक क्रियाकलापों से करती हैं।
- नगरीय बस्तियाँ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति द्वितीयक व तृतीयक क्रियाकलापों से करती हैं।
- नगर आर्थिक वृद्धि के नोड के रूप में कार्य करते हैं और न केवल नगर निवासियों को बल्कि अपने पश्च भूमि की ग्रामीण बस्तियों को भोजन और कच्चे माल के बदले वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं।
- नगरीय और ग्रामीण बस्तियों के बीच प्रकार्यात्मक सम्बन्ध परिवहन और संचार परिपथ के माध्यम से स्थापित होता है।
- बस्तियों के प्रकार निर्मित क्षेत्र के विस्तार और अन्तर्वास दूरी द्वारा निर्धारित होते हैं।
- गुच्छित ग्रामीण बस्ती घरों का एक संहत अथवा संकुलित रूप से निर्मित क्षेत्र होता है।
- नगरीय बस्तियाँ सामान्यत: सहज और विशाल आकार की होती हैं। ये बस्तियाँ अनेक प्रकार के अकृषि, आर्थिक और प्रशासनिक प्रकार्यों में संलग्न होती हैं।
- वर्ष 2011 में भारत में नगरीकरण 31.16 था, जो विकसित देशों की तुलना में काफी कम है।
- 20वीं शताब्दी के दौरान नगरीय जनसंख्या 11 गुना बढ़ी है।
- एक लाख से अधिक नगरीय जनसंख्या वाले नगरीय केन्द्र को नगर अथवा प्रथम वर्ग का नगर कहा जाता है। 10 लाख से 50 लाख की जनसंख्या वाले नगरों को महानगर तथा 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को मेगा नगर कहा जाता है।
- 1 करोड़ 84 लाख (वर्ष 2011) लोगों के साथ वृहत् मुम्बई सबसे बड़ा भारतीय संकुल है। दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बंगलुरु, हैदराबाद तथा पुणे देश के अन्य मेगा नगर हैं।